ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

गाली गलौज में 'मॉ' शब्द का इस्तेमाल क्यों?

ज़हीर ललितपुरी

मदर्स डे पर अगर लोग मॉ की गाली देने से तौबा कर लें तो मदर्स डे मनाना सार्थक होगा। दुनिया में कौन ऐसा इन्सान होगा जो अपनी मॉ की इज़्ज़त नहीं करता होगा। जैसी अपनी मॉ की इज़्ज़त होती है वैसी ही दूसरे की मॉ की भी इज़्ज़त होती है। जिस तरह हमारे लिये हमारी मॉ देवी के समान है और उसके क़दमों में जन्नत है उसी तरह दूसरों के लिये भी उसकी मॉ सम्मानीय होती है। इसलिये अगर हमें मॉ की गाली सुनना पसन्द नहीं तो उसी तरह किसी अन्य को भी मॉ की गाली सुनना पसन्द नहीं होगा। अगर सब लोग ऐसा सोचें तो मॉ के पवित्र रिश्ते का बहुत बड़ा सम्मान होगा। बल्कि लोग मॉ, बहिन, बेटी की गाली देना बन्द कर दें तो समस्त स्त्री ज़ाति का बहुत बड़ा सम्मान होगा।

इन्सानी समाज में बहुत सारे ऐसे कमवक्त इन्सान होते हैं जो अपनी जन्म भूमि, मातृभाषा, देश, नदियों और जानवरों का सम्मान तो मॉ की तरह करने का दावा करते हैं लेकिन जब कभी गुस्से में बेक़ाबू हो जाते हैं तो गाली गलौज करते समय मॉ के सम्मान में ऐसे ऐसे शब्दों का उच्चारण करते हैं जिसे पवित्र ज़बान से बोलने में शर्म आती है। ऐसे लोगों की नज़र मॉ का कितना सम्मान है उनके गाली गलौज के शब्दों से पता चल जाता है। मॉ के लिये अपमानजनक, गन्दे और अश्लील शब्दों से बनी गालियॉ लोग सिर्फ लड़ाई झगड़े या गुस्से की हालत में अथवा नशे की हालत में ही नहीं करते बल्कि अक्सर ऐसा देखने को मिलता है कि प्यार मुहब्बत की भाषा में इन गन्दे शब्दों को इस्तेमाल करने में ज़िल्लत महसूस करने के बजाय बड़ी लज़्ज़त महसूस करते हैं।

दूसरे की मॉ को गाली देना अपनी मॉ को गाली देने के समान है। जिस मॉ ने हमें अपनी कोख से जन्म दिया है उसकी तुलना भी किसी और चीज़ से नहीं की जा सकती हैं। फिर भी लोग धरती को मॉ कहते हैं। जन्म भूमि को मॉ कहते हैं। अपने देश को मॉ कहते हैं। अपनी मातृभाषा यानि मादरी ज़बान से प्यार करते हैं। देवियों को देवीमॉ कहकर पूजते हैं। पत्थर, लकड़ी और मिट्टी की मूर्तियों में मॉ के दर्शन कर अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं। चट्टानों, वादियों, घाटियों, नदियों और जानवरों तक को मॉ का सम्मान देते हैं। लेकिन अफसोस तब होता है जब यही लोग मॉ की अहमियत को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं। उसकी भावनाओं और तमन्नाओं को ख़्याल नहीं करते जो मॉ ख़ुदा की रहमत की निशानी है। जिस मॉ ने ख़ुद को भूखा रखकर औलाद को पाला है, अपनी ज़रूरतों को कुरबान कर अपनी औलाद की ज़रूरत करती हैं उसकी बेइज़्ज़ती करना कितनी घिनौनी करतूत है। अपनी मॉ की ख़िदमत न करना, उसकी उपेक्षा करना, बात बात में उसे ज़लील करना एक सभ्य समाज के माथे पर कलंक तो है ही लेकिन किसी की मॉ के साथ अश्लील रिश्ते को जोड़कर गाली गलौज करना या हंसी मज़ाक और प्यार मुहब्बत में एक दूसरे की मॉ से गन्दा रिश्ता जोड़ना कौन सी सभ्यता है।

इन्सान की सबसे बड़ी दौलत मॉ होती है। जिसके पास मॉ है वह दुनिया का सबसे बड़ा अमीर आदमी है। मॉ और औलाद का जो रिश्ता होता है उससे बढ़कर कोई दूसरा रिश्ता नहीं होता। दुनिया के मालिक ने कायनात में जितनी भी नेमतें उतारी हैं उनमें सबसे बड़ी नेमत मॉ है। इस बात को साबित करने के लिये न किसी धार्मिक सबूत की ज़रूरत है, न किसी अदालत की दलील और नज़ीर की ज़रूरत हैं। मॉ की अहमियत को साबित करने के लिये सबूत और दलील के लिये सिर्फ मॉ की हक़ीक़त को पेश किया जा सकता हैं। मॉ अपनी नज़ीर खुद है। वे लोग कितने नादान हैं जो मॉ की

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

अहमियत नहीं समझते। अगर हम अपनी मॉ की अज़मत को समझते हैं तो उसी अज़मत का तकाज़ा यह है कि हम दूसरों की मॉ की अज़मत समझें और किसी की भी मॉ बहिन बेटी को गाली न दें।

ज़हीर ललितपुरी

Zaheer Lalitpuri,
Near Sadanshah, Behind G.G.I.C.,
Civil Line, Laitpur, 284403. Mob. No. 8960355835

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)